International Journal of History 2020; 2(2): 194-196

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2020; 2(2): 194-196
Received: 19-04-2020
Accepted: 25-06-2020

प्रवीण कुमार वर्मा
इतिहास विभाग, मलंगिया,
मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
प्रवीण कुमार वर्मा
इतिहास विभाग, मलंगिया,
मधुबनी, बिहार, भारत

लोक संस्कृति के विकास में संत रविदास का सामाजिक एव सांसकृतिक अवदान

प्रवीण कुमार वर्मा

सारांश
महान समाज सुधारक, संत षिरोमणि, परमयोगी महान रविदास के बचपन का नाम मानद दास था। रविदास का जन्म बनारस के पास एक छोटी सी बसती सिर गोवर्धन पुर में माघ शुक्ल पूर्णिमा रविवार को हुआ था। इनके पिता का नाम रघ या राघव तथा माता का नाम कर्मा देवी था। ये चँवरवंषी चमार जाति से थे। गुरू आचार्य प्रवर स्वामी रामानंद जी थे। सात वर्ष की अवस्था में ही ये प्रभु की नवधा भक्ति करने लगे थे। इनकी पत्नी का नाम लोणा था, जिसे तांत्रिक एवं चमत्कारों के देवी के रू‍प में पूजा जाता है। इनके नाम के बिना कोई मंत्र सिद्ध नहीं होता। संत रविदास को मीराबाई का गुरू माना जाता है। गुरू ग्रंथ साहेब में इनके लगभग सौ पद संग्रहित है। इनकी रचनाओं का एक संग्रह, रविदास की बाणी के नाम से प्रकाषित हो चुका है। रैदास भक्त, समाज सुधारक एवं सच्चे कर्म योगी थे।

प्रस्तावना
वैष्णव धर्म की भावना का उद्‌भव ईसा के पाँच सौ वर्ष पूर्व ही हो चुका था। जिस प्रकार बौद्ध और जैन मतों की भावना के मूल में धार्मिक सुधार प्रमुख था। उसी प्रकार वैष्णव मत की भावना को भी हम धार्मिक सुधार एवं सामाजिक सुधार का एक माध्यम कह सकते है। इसमें भक्ति भावना प्रधान थी, जो उत्तरोत्तर विकसित और परिवर्द्धित होकर भक्ति काल में राम काव्य और कृष्ण काव्य का आधार बनी।
संत षिरोमणि गुरू रविदास ने अंध विष्वास और पाखण्ड का खंडन कर भक्ति आन्दोलन से भारतीय समाज का उद्धार किया। उन्होंने एकेष्वरवाद का प्रचार किया तथा समाज को वर्ण–भेद रहित सरल मार्ग पर चलने का उपदेष दिया। उन्होंने सत्य, अंहिसा तथा मानव कल्याण की षिक्षा देते हुए समता एवं सत्य का प्रचार किया तथा जाति वाद, छुआछुत, अंध विष्वास एवं पत्थर पूजा का विरोध किया।
संत रविदास जी के पास ईष्वर प्रदत्त पारस मणि था, जिसका उन्होंने कभी भी उपयोग नहीं किया बल्कि उन्होंने पुनः लौटा दिये। इससे स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि उनके पास महान साधु का गुण विद्यमान था। गंगा का हाथ निकाल कर ब्राह्मणों का विवादों में परास्त करना, जल में शालीग्राम तैराना, सिंहासन से मूर्त्ति का रविदास जी के गोद में आकर बैठना, भोजन में अनेक रूप धारण करना इसके अनेक उदाहरण है। इनके तपोबल से प्रभावित होकर रानी झाली रविदास जी की षिष्य बनी। भारत में करोड़ो की संख्या में इनके अनुयायी है। संत रविदास ने माखण्डवाद एवं जातीय भेद पर प्रहार करते हुए कहा है–

'रविदास एकहीनूरते, जिमिउपज्योसंसार।
ऊँच–नीचकिहविध भये, बाभनऔनचमार।।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि इन्होंने जन्म को प्रधान नहीं मानकर कर्म को प्रधान माना है, जो सर्वग्राह्य है।
जब हिन्दुओं ने अपनी मंदिर, तालाब तथा कुओं पर दलित अथवा चर्मकार को जाने से निषेध कर दिया तो उन्होंने अपनी देवी–देवता के स्वयं खोज निकाला। महादेव, काली माई इनके आराध्य देव थे। गाँव में 'भूमियाँ माँ' इनकी देवी थी। चमारों की ''लोणामाँ'' जो लोणा चमारी के नाम से सुविख्यात है बहुत चमत्कारी और शक्तिश्षाली देवी है। जिसके नाम से या कसम से सभी मंत्र सिद्ध होते है। चर्मकारी के ''सयाने'' या ''भगत'' के माध्यम से लोणा माँ से लोग अपने दुःख–दर्द निवारण कराने आते थे।
संत–रविदास चमड़े की जूतीब नाकर जीवन–यापन करते हुए अपनी साधना जारी रखी और अपने अलौकिक शक्ति के बल पर हर क्षेत्र में ब्राह्मण वादी एवं अंधविष्वास ब्रह्ममणों को पराजित करते हुए साक्षात दिखा दिया कि ''जिसका मनचंगा उसकी कठौती में गंगा''। इन्सान की पहचान उनकी जाति से नहीं बल्कि उसके गुणों से होती है। इसलिए उन्होंने कहा–

रविदास बाभन न पूजिये, जो हाथ गुनहीन।
पूजिये पैर चण्डाल के, जो होय गुण प्रवीन।

उन्होंने आत्म–चिंतन एवं आत्म–षुद्धि पर बल दिया, जिसके सहारे वे ब्राह्मणों से महान बनें और अपनी पाल की ढुआई।

जाति से ओछी कर्म भी, ओछा कसव हमारा।
'नीच' से प्रभु 'ऊँच' किया है, कर रविदास खालसा चमारा।।

विषेष रूप से चर्म कार जाति के लोग जहाँ संत रविदास जी को अपना आराध्य मानकर 'रविदासी' बन गये। संत गुरू रविदास जी के समय चर्म उद्योगों को बहुत घृणित समझा जाता था। इस काम को करने वालों से छुआछुत की जाती थी। इस लिये गुरू रविदास जी ने बताया कि चमार किसी भी तरह घृणित नहीं है। संत गुरू रविदास जी के ज्ञान भरे विचार सुनकर चारों वर्णों के लोग बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें सदैव दण्तवत करने लगे। गुरू रविदास जी ने इस बात को प्रमाणित करते हुए कहा है– कि रविदास चमार असंतति करें, हरि की रति विमुख इक गाई। पतित अति उत्तम, भइया, चारि वर्ण पचे पाई आईं।।
संत गुरू रविदास जी के समय तक अस्पृष्यता की भावना पराकाष्ठा पर थी। ऐसा लगता है कि ''चमार'' ष्षब्द प्रयोग संत गुरू रविदास जी के अवधि से ही होने लगा था। लेखक करन सिंह दीवान के अनुसार गुरू रविदास जी के काल से ही 'चमार' नाम भारत में प्रचलित हुई। महात्मा रविदास जी ने अपनी वाणियों में बड़े भाव से निर्भीक होकर चमार शब्द का प्रयोग किया है।

कहि रविदास खलास चमारा।
जो हम सहरी सो मीतु हमारा।

संत गुरू रविदास जी डंके की चोट पर कहे है कि मैं चमड़ें के शरीर रूपी घर से मुक्त हो गया हूँ। इसलिए जो शहर का वासी है अर्थात् जिसके हृदय में मानवता के लिए प्यार है, वही हमारा मित्र है ।एक अन्य शब्द में भी उन्होंने कहा है।

जागीसर पावहि नहीं तुअ गुण कथनु अपार।
प्रेम भगति के कारणें, कहु रविदास चमार।।

हे मेरे परम पिता परमात्मा तुम्हारे गुणों का वर्णन अनंत है। तुम्हारें गुणों का थाह नहीं पाया जा सकता क्योंकि बड़े–बड़े योगी भी आपको नहीं पा सके। मैं इस चमड़े के शरीर रूपी मकान में प्रवेष पाकर ही समझ सका हूँ, कि प्रेम भक्ति ही इस जीवन का एक मात्र अमूल्य लक्ष्य है।
महात्मा रविदास जी ने चमार शब्द की व्याख्या यहाँ बड़े सुसज्जित एवं रोचक ढंग से पस्तुत किया है।

जब देखा तब चामों चाम, चाम मंदिर मांहि खेले राम।।टेक।।
चाम का अंट चाम का नगारा, चामों चाम बजाबन हारा।।
चाम का बछड़ा, चाम की गाय, चामों चाम दुहावन जाये।।
चाम का घोड़ा चाम की जीन, चामों चाम करे तालीम।
चाम का पुरूष चाम की जी, चामो चाम मिलवा हो।।
कहि रविदास चाम हमारा भाई।
चाम मंदिर में राम देहि दिखाई।।

हम सृष्टि में प्रत्येक मानव की असमय सृजना चमड़े के तेज द्वारा चमड़े के घरौदे में हुई है। आदिम मानव चमड़े पर निर्भर था, चमड़ें से ही अपन शरीर को सर्दी–गर्मी से रक्षा करता था। जब से जीवन मिला है हमारे चारों ओर 'चमड़ा दृष्टि गोचर होती है। इस चर्म पिंजरे के मन मंदिर में परमब्रह्म के रूप में सगका मालिक खेल रहा है। ऊँट पर समार माम से मढ़ा हुआ नगाड़ा (डंका) ऐसा लगा रहा है जैसे चमड़े का खिलौना (मानव) चाम को ही बजाकर पूर्ण संसार को एक खुषी का पैगाम दे रहा है, जैसे चाम की गाय से चाम की बछड़ा गाय की दूध को पहचान रहा है विषेष रूप से चिंतन करने पर लगता है कि संसार में हर मानव एक समान है, नहीं कोई ऊँचा और नहीं कोई निम्न होता है। जब एक दूसरे से जान पहचान होती है। तब एक शुभ मिलन होता है।
मनुष्य का चमड़ी गोरी हो या काली अंततः हम सब भाई–भाई है। एक दूसरे से साक्षात्कार करने से पता चलता है कि हमारे अन्तः करण में वहीं ईष्वर विराजमान है।वह अब मानव है। संत रविदासजी के समय तक आते–आते शूद्र वर्ण की प्राचीन ख्याति समाप्त कर चुकी थी।
सतगुरू रविदास जी ने अपने शब्दों में अपनी जाति का नाम 'कुट बाढ़ला' कहकर इसकी ऐतिहासिक ख्याति का उद्घोष किया है कि सत् गुरू रविदास जी सूर्यवंषी है।

हम युगाही से आया रे पंडित ज्ञानी,
चेतन हँस पुकारा।। टेक।।
चारों वर्ण वेद से हैं प्रकट,
आदि सूर्य वंष हमारा।।
कहि रविदास एक ही स्वामी,
बाजी रचावन हारा।

मध्ययुग का भक्ति आंदोलन एक सामाजिक एवं धार्मिक क्रांति का था।
जिसके प्रवर्त्तक संत रविदास जी थे। इन्होंने भारत में समाजवाद का नारा बुलंद किया था। समकालीन संतों में कबीर साहब, नामदेव, सेन, पीपा, ओहर, कमाल आदि के जुड़ने के कारण यह आंदोलन और भी तीव्र होने से सफलता मिली।
वैसे तो चमड़ा का वर्णन रामचरितमानस में भी देखने को मिलता है। जंगल मे सीता जी सोने का मृग देखकर अपने पति श्री रामचंद्र जी से आग्रह की थी कि इसे मारकर इसका चमड़ा ला दीजिये उसकी मृग छाला बड़ी सुन्दर होगी यथा–

सीता परम रूचिर मृग देखा, अंग–अंग सुमनोहर देखा
अति विचित्र कछु वरनि न जाईः कनक देह मनि–रचित बनाई
सुनहू देव रघुवीर कृपाल, एहि मृग कर अति सुन्दर छाला
सत्य संघ प्रभु बंध कर एहिः ''आनहु चर्म' कहत वैदही।''

उपर्युक्त प्रसंग से ज्ञात होता है कि सीता जी भी मृग चर्म के महत्व से पूर्ण परिचित थी। अर्थात चमाड़ का उपयोग उस समय उच्चवर्गीय हिन्दुओं के द्वारा भी होती थी।
चर्मकार जाति के लोग अपने की रविदास मानने लगे वहीं कुछ व्यक्ति कबीर के विचारों से प्रभावित होकर उसी पथ को स्वीकार कर लिया तथा एक दूसरे के साथ भाईचारा का व्यवहार कर शक्ति आंदोलन का आंदोलित किया। समाज में अस्पृष्यता तथा ब्राह्मणवाद का विरोध किया उन्होंने अपने गुरू की अमर वाणी सदा याद रखे–

सन्दर्भ सूची

1. पृ सं0–58 आदिम जाति चमार आदि धर्म मिषन मतावलम्बी वनता राम धेड़ा की खोज के अनुसार।
2. जी0 डब्लू0 ब्रिग्स।
3. उपकार गाईड जुनियर रिसर्च फेलोषिप एवं लेक्चरषिप।
4. बाबू जगजीवन राम अभिनंदन ग्रंथ पृ0 सं0 – 371।
5. ''चमौर जाटव सम्राट'' पुस्तक पृ0 सं0 7 लेखक करन सिंह दिवान।
6. आदिग्रन्थ पृ0स0 –115

7. वही, पृ0संव –115
8. आदिम जाति चमार, पृ0 सं0 –115
9. संत जगवीर सिंह।
10- दासानुदास रविदास, पृ0 सं0 29
11- रामचरितमानस् अरण्य काण्ड।।